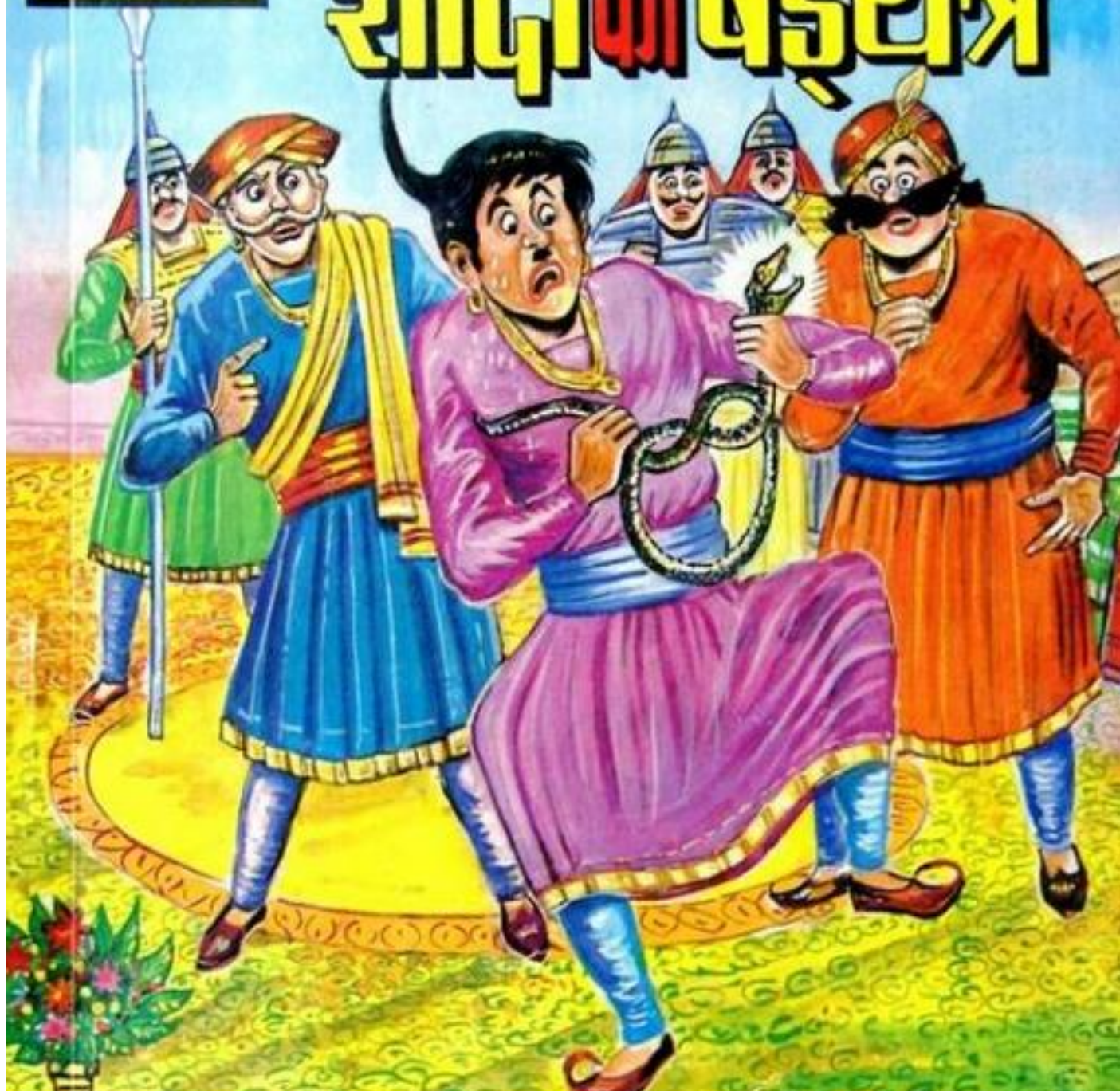


**राज**

**कॉमिक्स**

मूल्य 15.00 संख्या 148

# बांकेलाल और शादी का षड्यंत्र





# बांकलाल और झाड़ी षड्यन्त्र

चित्रांकन: खेदी □ कहानी: लछणकुमार वाही □ सम्पादन: मनीष चन्द्र गुप्त

एक दिन विक्रमसिंह के दरबार में बैठे-बैठे सकासक बांकलाल के मस्तिष्क में एक विचार कौंधा—



यह सोच वह प्रसन्न हो मन ही मन बोला—



जबकि महाराज विक्रमसिंह कह रहे थे—













राज कामक्स





साँप का १५५४





लेकिन ठीक उसी क्षण एक झटके के साथ द्वार खुल गया। महामंत्री धर्मसिंह ने अपने सैनिकों के साथ वहां प्रवेश किया और भीतर बांके पर नजर पड़ते ही महामंत्री आश्चर्य से बोले—

















राज कॉमिक्स



मन ही मन यह सोचते हुए बांकलाल ने लगाम छोड़कर महाराज को कसकर पकड़ लिया—



लेकिन इससे पूर्व कि वह महाराज को धक्का दे पाता, एक तीर हवा में सरसराया और—



बांकलाल के मुंह से एक दर्दभरी चीख निकल गई—





क्रोध में भरे महाराज विक्रमसिंह ने तुरन्त दो तीर एक साथ धनुष पर रखे और घुड़सवारों की ओर निशाना साधकर छोड़ दिया। अगले ही पल वे दोनों तीर उन दोनों घुड़सवारों के शरीरों में धँस गए—



इधर राजा विक्रमसिंह ने तुरन्त घोड़ों को काबू में किया और रथ को वापिस महल की ओर मोड़ दिया—



और तुम्हारे कंधे से तीर भी हमने निकाल फेंका है।

हे भगवान! यह तू मेरे साथ कैसे चल कर रहा है। अगर मुझे पहले ही बता देता कि कोई तीर आकर राजा को लगाने वाला है तो मैं उसे धक्का देने की क्यों सोचता।



यह सुनते ही बांकेलाल मन ही मन जलभुन गया—



फिर महल पहुँचकर बांकेलाल की मरहम-पट्टी कट दी गई—













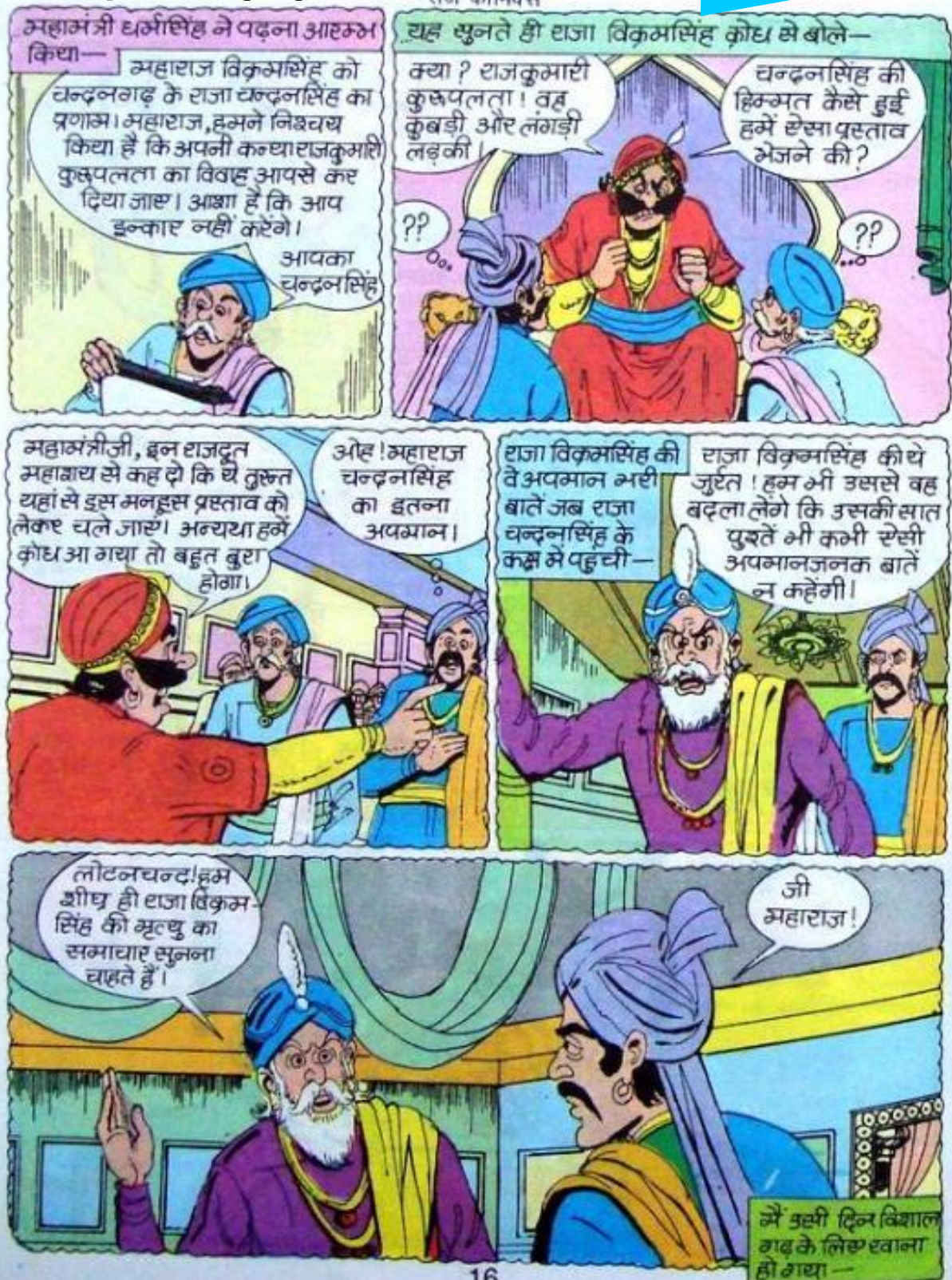
राज कामरस

















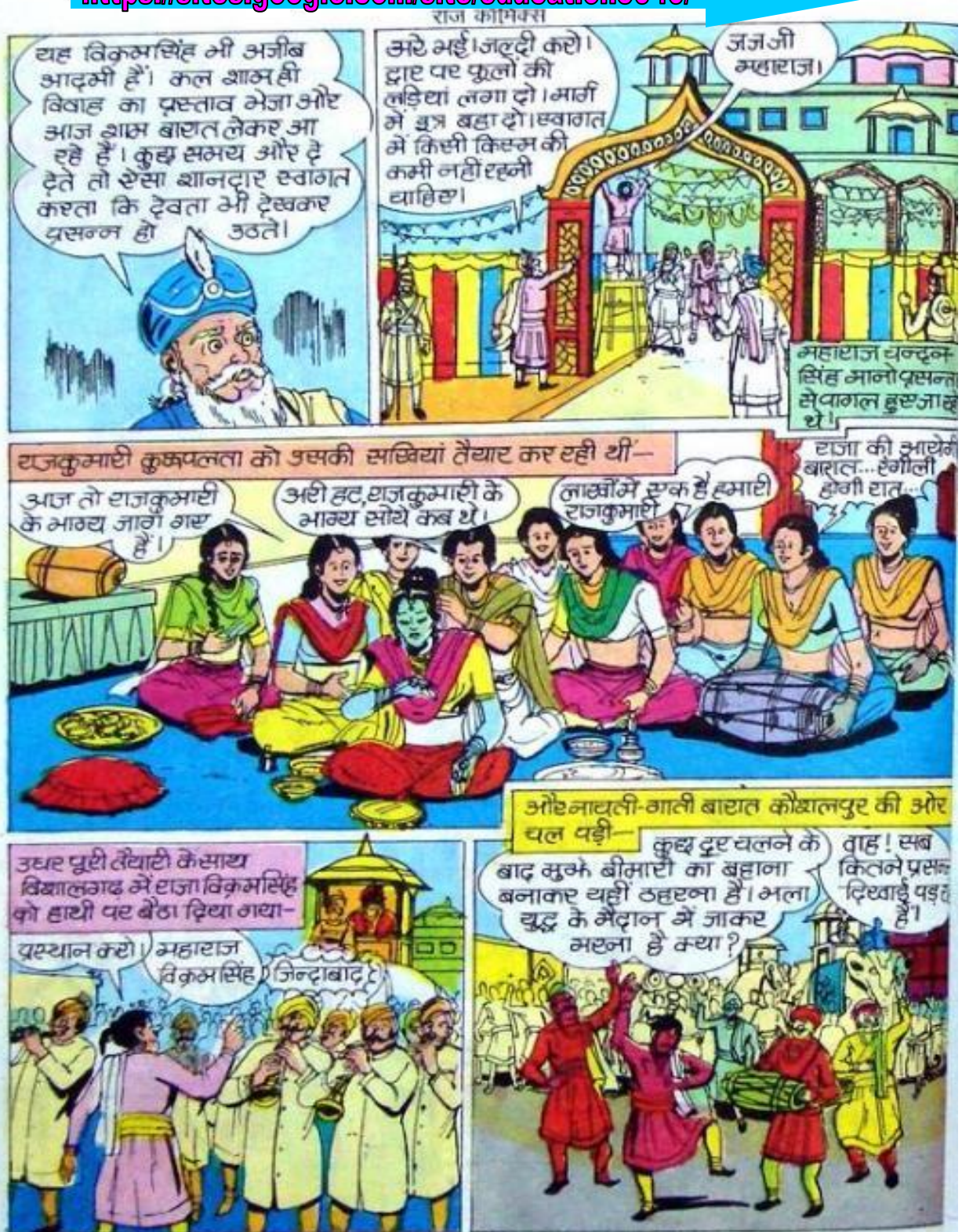
राज कोमिवस













शादी का पड़ोस















कौशलपुर में सारी तैयारियां पूरी हो चुकी थीं। बाघल के पहुंचने पर बारात का भव्य स्वागत किया गया-



विवाह की रस्म अदा होने वाली थी कि तभी समाचार मिला-







फिर जितना भी इन्तजाम हो सका, उतनी ही सेना लेकर राजा कुशलसेन, विक्रमसिंह के साथ रणभूमि की ओर चल पड़े—



दोनों सेनाएं आमने-सामने पहुंच गईं। तभी राजा चन्दनसिंह गरज पड़े—

































<https://sites.google.com/site/education5040/>